**काव्य हेतु**

**शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् ।**

**काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ॥**

(काव्यप्रकाश कारिका 3)

**अनुवाद-** शक्ति, लोक-शास्त्र-काव्य आदि के अध्ययन से प्राप्त निपुणता तथा काव्यज्ञ से प्राप्त शिक्षा काव्य की उत्पत्ति के कारण हैं ।

**शक्ति- शक्तिः कवित्वबीजरूप संस्कार विशेषः यां विना काव्यं न प्रसरेत्, प्रसृतं वा उपहसनीयं स्यात् ।** अर्थात् शक्ति कवित्वबीजरूप संस्कार विशेष है, जिसके बिना काव्य की रचना नहीं हो सकती और यदि हो भी जाए तो वह उपहसनीय होती है ।

**लोक- लोकस्य स्थावरजङ्गमात्मकस्य लोकवृतस्य ।** अर्थात् स्थावर और जङ्गम रूप संसार का व्यवहार ।

**शास्त्र– शास्त्राणां छन्दोव्याकरणाभिधानकोशकला चतुर्वर्गगजतुरगखड्गादि लक्षणग्रन्थानां काव्यानां च महाकविसम्बन्धिनाम् ।** अर्थात् छन्द, व्याकरण, शब्दकोश, कला, चतुर्वर्ग(धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष), हाथी, घोड़े एवं खड्ग आदि के लक्षण ग्रन्थ । काव्यानां का अर्थ है महाकवियों से सम्बन्धित काव्य ।

इन सभी का गहन अध्ययन कर ज्ञान अर्जित करना निपुणता है । काव्य की रचना करना तथा उसके गुण-दोष का विचार करने वाले जो लोग हैं उनके उपदेश से काव्य की रचना तथा पुनर्संयोजित करने का बार-बार अभ्यास करना । इस प्रकार ये तीनों(शक्ति/प्रतिभा, निपुणता और अभ्यास) अलग-अलग नहीं, अपितु सम्मिलित रूप से काव्य के निर्माण तथा विकास में कारण हैं ।

आचार्य मम्मट ने काव्य-कारण के रूप में तीन तत्त्वों को स्वीकार किया है- प्रतिभा, सांसारिक विषय, विविध शास्त्र तथा काव्य आदि के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान तथा काव्य के तत्त्वों के जानने वाले काव्यज्ञ पुरुषों के सान्निध्य में बारम्बार अभ्यास । इन तीनों के साथ मिलने पर ही काव्य रचना हो पाती है ।

**1. शक्ति- ‘शक्तिः कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः’ ।** अर्थात् शक्ति कवित्व का बीज है तथा यह संस्कार विशेष रूप में कवियों में जन्मजात विद्यमान रहती है । इसका तात्पर्य है कि शक्ति को अर्जित करने के लिये प्रयास करने की जरूरत नही होती है । शक्ति प्रतिभा का अपर नाम है । आचार्यों ने प्रतिभा को नैसर्गिक माना है । आचार्य कुन्तक ने तो स्पष्ट कहा है कि पूर्व जन्म तथा इस जन्म के संस्कार के परिपाक से पुष्ट होने वाली विशिष्ट कवित्व शक्ति ‘प्रतिभा’ है ।

आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य के हेतुत्रय में प्रतिभा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । प्रतिभा के अभाव में निम्नकोटि के काव्यों की रचना होती हो पाती है जिससे कवि और काव्य दोनों का उपहास होता है ।

आचार्य भट्टतौत ने प्रतिभा के विषय में कहा है कि इसी के माध्यम से कवि नूतन कल्पनाएँ करता है, पुरातन कथा को नवीन बना देता है तथा काव्य में नवीन रस का सन्निवेश करता है ।

आचार्य आनन्दवर्धन ने प्रतिभा को काव्यगत दोषों को दूर करने का साधन माना है ।

**2. निपुणता-** निपुणता वस्तुतः विविध शास्त्र एवं लोक का गहन अध्ययन कर अर्जित ज्ञान है । प्रतिभा जहां ईश्वरप्रदत्त है, वहींनिपुणता कवि के द्वारा अध्ययन एवं अनुभव से अर्जित की जाती है । निपुणता लोक, शास्त्र तथा काव्यादि के अध्ययन एवं चिन्तन से कवि में निपुणता आती है ।

यहां लोक से तात्पर्य है संसार के जड़ एवं चेतन प्राणियों के व्यवहार का अध्ययन । संसार में अनन्त विषय हैं और काव्य-रचना के लिये कवि को सभी विषयों का ज्ञान होना चाहिये ।

शास्त्रों मे छन्द शास्त्र की अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि पद्यकाव्य तो छन्दोबद्ध ही होते हैं ।(आचार्य पिंगल प्रणीत छन्दशास्त्र) । व्याकरणशास्त्र से शब्दों के सम्यक् ज्ञान तथा प्रकृति-प्रत्यय का ज्ञान होता है ।(आचार्य पाणिनि प्रणीत व्याकरणशास्त्र ) । कोश ग्रन्थ से शब्दों के विविध अर्थ का ज्ञान होता है ।(आचार्य अमर सिंह प्रणीत अमरकोश) ।

कला से तात्पर्य नृत्यादि 64 कलाएं । चतुर्वर्ग से तात्पर्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष । सांख्य, वेदान्त, योगादि मोक्षशास्त्र के अन्तर्गत स्वीकार किये गये हैं । इसी प्रकार गजशास्त्र, अश्वशास्त्र एवं खड्गशास्त्र का ज्ञान कवि के लिये आवश्यक है ।

**3. अभ्यास-** किसी भी कार्य में दक्षता प्राप्ति के लिये अभ्यास की आवश्यकता होती है । अभ्यास सदैव किसी के निर्देश में करना चाहिये । काव्य रचना के जिज्ञासु कवि को चाहिये वह श्रेष्ठ काव्य की रचना करने वाले तथा काव्य के गुण-दोष की विवेचना करने में समर्थ विद्वान् के सान्निध्य में काव्य की रचना करे, विद्वान् कवि के द्वारा बताये मार्ग का अनुसरण करे तथा काव्य-दोषों का परिमार्जन करे । इस प्रकार बार-बार अभ्यास करने से काव्य रचना में प्रौढ़ता आती है ।

**निष्कर्ष-**  शक्ति, निपुणता और अभ्यास सम्मिलित रूप से काव्य के हेतु हैं । इनमें से किसी एक के अभाव में भी काव्य का निर्माण नही हो सकता है ।